चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

प्रथम अध्याय -- वर्माजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

डॉ. वृन्दावनलाल वर्माजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष तक पहुँच चुका हूँ कि जिस परिवार में वृन्दावनलाल वर्माजी का जन्म हुआ वह परिवार राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत था । उनके दादा-परदादा झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के झण्डे के नीचे अंग्रेजों के विरोध में लड़ चुके थे । स्पष्ट है कि देशप्रेम के संस्कार उन्हें विरासत के रूप में ही प्राप्त हुये । वृन्दावनलाल वर्माजी का अधिकांश जीवन काल शिकार खेलने में, ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण करने में, झीलों ,नदियों, पहाड़ों को घूम-घूम से देखने में बीता है । उन्होंने अपने पूर्वजों की शौर्य गाथा अपनी दादी-परदादी से सुनी थी, बुन्देलखण्ड, झाँसी (दतिया) आदि प्रदेश और वहाँ का जन-जीवन,गौरवपूर्ण इतिहास और संस्कृति उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गये थे । दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा लिखा हुआ भारत का झूठा इतिहास भी उन्होंने पढ़ा था । फल स्वरूप यहाँ की उज्ज्वल संस्कृति और इतिहास को उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहा । इन कारणों से वृन्दावनलाल वर्माजी को ऐतिहासिक उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिली और वे लगातार लिखते चले गये । वृन्दावनलाल वर्माजी सेवाभावी स्वभाव के धनिक रहे हैं । हिन्दुस्तान में अन्धश्रद्धाएँ, जाति-पाँति के बंधन, रूढ़ि परम्परा,छुआ-छूत से समाज ग्रस्त था, इन सबको उन्होंने तोड़ने की कोशिश की है । उत्पीड़ित समाज को उन्होंने सहानुभूति की नजर से ही देखा है । ऐतिहासिक उपन्यासों के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक उपन्यास,नाटक,कहानी तथा एकांकी आदि का भी लेखन किया है । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में वे लिखते रहे हैं ।

अपने जीवन काल में वृन्दावनलाल वर्माजी को साहित्य कृति के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुये हैं किन्तु सर्वाधिक पुरस्कार उन्हें 'मृगनयनी' उपन्यास को प्राप्त हुये हैं।

मेरा यह निष्कर्ष है कि 'मृगनयनी' वृन्दावनलाल वर्माजी की सर्वश्रेष्ठ रचना है। अपने उच्चकोटि के उपन्यासों की बदौलत वे न केवल प्रतिभासम्पन्न उपन्यासकार हैं अपितु हिन्दी उपन्यास साहित्य की एक प्रबल शक्ति के रूप में हैं।

तृतीय अध्याय -- हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य ---

सारांश के रूप में उपन्यास के बारे में कहा जा सकता है कि उपन्यास मनुष्य की बाहरी और भीतरी प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर जीवन को प्रेरणा देता है। वह दिशा सूचक है, जो कि भूत का स्पष्टीकरण और वर्तमान का विश्लेषण करके भविष्य के निर्माण का संकेत देता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का अधिक्य रहता है। पर कल्पना का आधार भी ऐतिहासिक सत्य ही होता है। जिस तरह एकही ऐतिहासिक विषयपर विभिन्न इतिहासकार विभिन्न प्रकार से लिखते हैं, उसी तरह ऐतिहासिक उपन्यासकार भी एक ही विषय को विभिन्न दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। हिन्दी में ऐतिहासिक लेखन की परम्परा किशोरीलाल गोस्वामी के 'स्वर्गीय कुसुम कुमारी' उपन्यास से प्रारम्भ होती है। हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास लेखन का प्रारम्भ प्रेमचन्दपूर्व काल में हुआ। उसका विकास प्रेमचन्द काल में होने लगा और प्रेमचन्दोत्तर काल में वह चरणसीमा तक पहुँच गया।

प्रेमचन्दोत्तर कालीन ऐतिहासिक उपन्यासकारों में डॉ.वृन्दावनलाल वर्माजी का श्रेष्ठत्व निम्नलिखित कारणोंसे साबित होता है ---

१) वृन्दावनलाल वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और इतिहास का मिश्रण है ही किन्तु कल्पना का प्रयोग करते समय उन्होंने इतिहास को कभी आँच नहीं आने दी। अर्थात वृन्दावनलाल वर्माजी ने अपने

उपन्यासों में ऐतिहासिक सत्यों की पूरी तरह रक्षा की है ।

२) वृन्दावनलाल वर्माजी ने बुन्देलखण्ड, झाँसी, ग्वालियर आदि स्थानों का चिरपरिचित इतिहास लेकर तथा चिरपरिचित ऐतिहासिक पात्र लेकर अपने उपन्यासों में इतिहास के सत्य को साहित्यिक दृष्टि से परखा है ।

३) वृन्दावनलाल वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु की विशेषताएँ हैं -- सजीवता, सरसता तथा रोचकता । उन्होंने अपने उपन्यासों के कथानक को कलात्मकता के सहारे नीरसता से बचाकर सरसता प्रदान की है ।

तृतीय अध्याय -- 'मृगनयनी' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन -

मृगनयनी के कथा-स्रोत विख्यात इतिहास के अतिरिक्त स्थानीय रूप से प्रचलित अतीत वृत्त, घटनास्थल का अवशिष्ट वातावरण तथा लोककथाएँ हैं । लेखक ने कथा-घट को पूर्णकर उसे रोचक बनाने के लिए कल्पना का आश्रय लिया है । उनकी कल्पना 'तथ्य मूलक' है । जीवन में जो चरित्र और घटनाएँ देखी, सुनी हैं, उन्हीं को अपनी कल्पना का उपजीव्य बनाया है । इतिहास से प्राप्त तथ्यों की खोज में लेखक दत्तचित है, किन्तु विदेशी या उनसे प्रभावित इतिहासकारों द्वारा प्रतिपादित 'तोड़े-मरोड़े' गये तथ्य उन्हें यथावत स्वीकार्य नहीं हैं । विकृत तथ्यों की स्थान-पूर्ति तथा तथ्यों के मध्य रिक्त स्थलों की पूर्ति के लिए उन्होंने जन-परम्परा का आश्रय लिया है । उन्हें परम्परा अतिशयता की गोद में खेलती हुई भी सत्य की ओर संकेत करती जान पड़ती है । इस प्रकार 'मृगनयनी' में वर्माजी ने इतिहास से खोजबीन कर तथ्य जुटाये हैं, और उन्हें विचार, विवेचन, कल्पना तत्वों से कार्यकारण शृंखला प्रदान की है ।

चरित्र-चित्रण ---

राजामानसिंह और मृगनयनी के चरित्रों द्वारा लेखक ने स्पष्ट रूपसे यह बताने की चेष्टा की है कि मनुष्य में उदारता आवश्यक है । रूढ़ियों का बंधन तोड़ना

होगा । मानसिंह ने तो जाति बंधन को तोड डाला और रूढिवादिता के विरुध्द युध्द किया । विजय जंगम के चरित्र में वर्माजी ने श्रम को ही महत्व दिया है । सभी पात्र एक एक संप्रदाय के प्रतीक बनते हैं । विजय जंगम लिंगायत सम्प्रदाय के रूप में, बोधन ब्राह्मण जाति के प्रतीक के रूप में, अटल ग्रामीण युवक के प्रतीक के रूप में नजर आता है और लाखी का चरित्र कर्तव्य को महत्व देता है । बैजू-आचार्य प्रतिभा और मौलिकता के रूप में, ग्यासुद्दीन विलासी के रूप में, नसीरुद्दीन का चरित्र राजतंत्र के पतित के रूप में नजर आता है । वृन्दावनलाल वर्माजी ने हर वर्ग के प्रतिनिधिका चरित्र अपने " मृगनयनी " उपन्यास में चित्रित करने की चेष्टा की है ।

वार्तालाप --

" मृगनयनी " उपन्यास के वार्तालाप विशेषताओं से युक्त है । कथानक में गतिप्रदान करना, कौतुहल तथा उपन्यासकार का जीवन दर्शन आदि विशेषताओंका समावेश वार्तालाप में किया है । प्रणय-संवाद मार्मिक और सजीव है । ग्रामीण स्त्रियों के परस्पर झगडों का मनोवैज्ञानिक महत्व है । युवतियों की ठठोली में अल्हडपण, छेडा-छेड, मान-मनौवल सब कुछ है । इसी तरह उपन्यास के संवादों में संक्षिप्तता, सरलता, स्वाभाविकता, सूक्ष्मता, रोचकता, नाटकीयता प्रभावोत्पादकता आदि गुण मौजूद होने से यह एक सफल उपन्यास बन पडा है ।

" मृगनयनी " एवं राजा मानसिंह के संवाद तो अत्यन्त प्रभावोत्पादक है । उनके संवादों से उपन्यासकार का उद्देश्य सामने आ जाता है । निष्कर्ष के रूप में, मैं यही कहूँगा कि " मृगनयनी " वार्तालाप या कथोप-कथन की दृष्टि से अत्यंत सफल उपन्यास साबित होता है ।

देशकाल-वातावरण ----

वेशभूषा, रहन-सहन, पात्रों के मनोभाव, प्राकृतिक शक्ति और सूचिता आदि का यथार्थ वर्णन करके वृन्दावनलाल वर्माजी ने वातावरण में जान भर दी है ।

वृन्दावनलाल वर्माजी ने ऐतिहासिक वातावरण का सूक्ष्मता से परीक्षण

किया है और उपन्यास में वातावरण निर्मिति की भरसक कोशिश की है, वो उनके उपन्यास के कथानक,पात्र तथा संवाद के लिए सहायक हो गयी है । ` मृगनयनी ` उपन्यास में वातावरण निर्मिति में स्वाभाविकता, सूक्ष्मता,वर्णनात्मकता,मार्मिकता, गहराई और विशालता के दर्शन होते हैं। यहाँ उनके वातावरण के औपन्यासिक तत्व की विकासात्मकता है ।

भाषा-शैली ---

` मृगनयनी ` उपन्यास में लेखने बोलचाल की सहजभाषा में कथा कहकर शैली की सरलता, स्वाभाविकता बनाए रखी है । कथा,पात्र,वातावरण सभी का सजीव चित्रण वृन्दावनलाल वर्माजी की महत्वपूर्ण देन है । इसमें वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है । इसमें रोचकता,सरलता,मार्मिकता,प्रभावात्मकता आदि गुण मिलते हैं । भाषा कोमल,मधुर तथा रसमयी है । वादविवाद,गंभीर विषय में भाषा का गंभीर रूप पति-पत्नी के वार्तालाप में व्यंग्यपूर्ण भाषा तथा नाटकीयता के तत्व सर्वत्र विद्यमान हैं । मुहावरों,उक्तियों,सूक्तियों के प्रयोग के कारण वर्माजी की भाषा भी अलंकृत बन पडी है । लोकोक्तियों से भी उनकी भाषा में स्वाभाविकता आ गई है ।

संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि संस्कृत के तत्सम शब्द,स्थानिय बुन्देलखण्डी,शब्द,उर्दू-फारसी के शब्द वातावरण निर्मिति में सहायक हैं। जहाँतक वर्माजी के ` मृगनयनी ` उपन्यास का सवाल है, वर्माजी स्वाभाविक और वास्तववादी भाषा देने में पूर्ण सफल नजर आते हैं । भाषा शैली की दृष्टि से वर्माजी का यह उपन्यास अत्यन्त सफल बन पडा है ।

उद्देश्य --

ऊपर के विवेचन के बाद हम यह निश्चय कर सकते हैं कि वृन्दावनलाल वर्माजी निश्चय ही एक आदर्शवादी कथाकार हैं । लेकिन वे यथार्थ से विमुख नहीं हैं । यथार्थ का उनका चित्रण है, आदर्श उनकी ध्वनि है । वृन्दावनलाल वर्माजी ऐतिहासिक कथाकार हैं, लेकिन समसामायिक जीवन उसमें झलके मार रहा है । यह एक

असम्भव साधन है, लेकिन समर्थ उपन्यासकार ने उसे सम्भव बनाया है । वर्माजी को प्रगतिशील कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है । मानव जीवन के विविध परिवेशों की प्राय: सभी समस्याएँ 'मृगनयनी' में मौजूद है । आदर्शवादी ध्वनि से युक्त यथार्थ चित्रण सम्पन्न किसी भी साहित्यिक कृति को प्रगतिशील कहा जायेगा । जिस अर्थ में प्रेमचन्द को 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' या 'उपयोगितावादी' कहा जाता है, उसी अर्थ में वृन्दावनलाल वर्माजी को भी 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' या ऐतिहासिक यथार्थवादी कहा जा सकता है ।

मनुष्य का जन्म साभिप्राय है । उसे जीवन में जो कुछ मिला है, उसी में संतुष्ट रहकर यथाशक्ति कुछ जोड़ने का प्रयत्न करते रहना चाहिये । 'अनवरत' प्रयत्न का दूसरा नाम जीवन है । 'मृगनयनी' में मृगनयनी और राजा मानसिंह के माध्यम से संतुलन के साथ साथ मानव जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने का प्रयत्न वृन्दावनलाल वर्माजी ने किया है । साथ ही इसमें शस्त्र और शास्त्र के साथ साथ शारीरिक और उपयोगी कला प्रेरणा से समन्वित मानव को श्रेष्ठ बताया है । 'मृगनयनी' उपन्यास में वृन्दावनलाल वर्माजी की यह दृष्टि सर्वत्र मौजूद है । उन्होंने इसके माध्यम से कई वर्तमान समस्याओं को उठाया है, और एक भ्रष्ट राष्ट्र को उपयोगी संदेश भी दिया है ।

••